



ISSN: 3049-2017

IJMH 2026; 3(5): 99-101

© 2026 IJMH

www.themultijournal.com

Received: 19-09-2026

Accepted: 07-10-2026

Publish : 08-10-2026

ज्योति परेता

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत,
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस-
श्री अटल बिहारी वाजपेई शासकीय-
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
इंदौर (म. प्र.)

Correspondence:**ज्योति परेता**

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत,
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस-
श्री अटल बिहारी वाजपेई शासकीय-
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
इंदौर (म. प्र.)

शिक्षा के माध्यम से सार्वभौमिक मूल्यों का विकास :**सत्य, धार्मिक आचरण, शांति एवं अहिंसा****ज्योति परेता****सारांश**

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न होकर ऐसे नैतिक एवं उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण करना है, जो सत्य, धार्मिक आचरण, शांति तथा अहिंसा जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात् कर सकें। प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय ज्ञान-परम्परा, बौद्ध एवं गांधीवादी दर्शन तथा संवैधानिक मूल्यों के आलोक में इन सार्वभौमिक मूल्यों की अवधारणा, स्वरूप एवं शैक्षिक महत्त्व का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट है कि मूल्यपरक शिक्षा चरित्र निर्माण, सामाजिक समरसता, मानवाधिकारों के सम्मान तथा मौलिक कर्तव्यों के निर्वहन की आधारशिला है। निष्कर्षतः विद्यालयी शिक्षा में मूल्य-आधारित शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम एवं नैतिक व्यवहार के समावेशन से शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण एवं उत्तरदायी समाज के निर्माण को सुदृढ़ किया जा सकता है।

शब्द कुंजी - सार्वभौमिक मूल्य, मूल्यपरक शिक्षा, सत्य, धार्मिक आचरण, शांति, अहिंसा, मानवाधिकार, मौलिक कर्तव्य, भारतीय ज्ञान-परम्परा, चरित्र निर्माण, संवैधानिक मूल्य, नैतिक शिक्षा।

• परिचय

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन अथवा आजीविका के साधन उपलब्ध कराना नहीं है, बल्कि ऐसे उत्तरदायी, नैतिक एवं संवेदनशील नागरिकों का निर्माण करना है जो सत्य, धार्मिक आचरण, शांति एवं अहिंसा जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाएँ। भारतीय ज्ञान-परम्परा में भी शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का माध्यम है, जहाँ ज्ञान के साथ चरित्र, सदाचार, आत्मानुशासन तथा लोककल्याण की भावना का भी विकास होता है। भारतीय परम्परा में अहिंसा और शांति केवल नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि समाज के संगठन, मानव कल्याण तथा सामाजिक समरसता के मूलाधार हैं। वैदिक, उपनिषदिक, बौद्ध, जैन तथा गांधीवादी चिंतन में इन मूल्यों को व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए अनिवार्य माना गया है। शिक्षा इन मूल्यों के आत्मसात् का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम है, क्योंकि विद्यालय एवं शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, सहिष्णुता, करुणा, सहअस्तित्व तथा मानव गरिमा के प्रति सम्मान का विकास करती है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हिंसा, असहिष्णुता, नैतिक पतन तथा सामाजिक विघटन जैसी चुनौतियों के मध्य मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई है। शिक्षा के माध्यम से विकसित सत्य, धार्मिक आचरण, शांति एवं अहिंसा न केवल संवैधानिक मूल्यों, मानव अधिकारों एवं मौलिक कर्तव्यों की सुदृढ़ आधारशिला हैं, बल्कि न्यायपूर्ण, समरस एवं शांतिपूर्ण समाज के निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान के साथ ऐसे सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का संवर्धन करना होना चाहिए, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सतत एवं संतुलित विकास का आधार बन सकें।

● वैचारिक एवं व्यवहारिक विक्षेपण एवं चर्चा

1. सार्वभौमिक मूल्यों की अवधारणा एवं शिक्षा में उनका महत्व

सार्वभौमिक मूल्य वे नैतिक एवं मानवीय आदर्श हैं जिन्हें जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति अथवा भौगोलिक सीमाओं से परे सम्पूर्ण मानव समाज के लिए समान रूप से स्वीकार किया जाता है। इन मूल्यों का उद्देश्य मानव जीवन में नैतिकता, सह-अस्तित्व, न्याय, करुणा तथा उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना है। भारतीय ज्ञान-परम्परा में सत्य, धार्मिक आचरण (धर्म), शांति तथा अहिंसा को मानव जीवन की आधारशिला माना गया है। ये मूल्य केवल व्यक्तिगत सद्गुण नहीं हैं, बल्कि सामाजिक समरसता, विश्वबंधुत्व और मानव कल्याण के प्रमुख आधार भी हैं।

शिक्षा इन मूल्यों के विकास का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम है। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो संवैधानिक मूल्यों, मानवाधिकारों तथा मौलिक कर्तव्यों के प्रति सजग हों। विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का आचरण, सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ तथा सामाजिक सहभागिता विद्यार्थियों में मूल्य चेतना का निर्माण करती हैं। इस प्रकार मूल्यपरक शिक्षा ज्ञान को व्यवहार में रूपान्तरित कर चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाती है।

उदाहरण : विद्यालय में प्रार्थना सभा, सामूहिक स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, सामुदायिक सेवा तथा राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग, उत्तरदायित्व एवं सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करते हैं।

2. सत्य एवं धार्मिक आचरण: मूल्यपरक शिक्षा का नैतिक आधार

सत्य (Truth) वह नैतिक सिद्धांत है जो विचार, वचन और कर्म की एकरूपता को व्यक्त करता है। भारतीय दर्शन में सत्य को शाश्वत एवं सर्वोच्च मूल्य माना गया है। महात्मा गांधी ने सत्य को ईश्वर का पर्याय बताते हुए कहा कि सत्य की प्राप्ति का मार्ग अहिंसा है। सत्य को पंचशील तथा नैतिक जीवन के प्रमुख आधारों में सम्मिलित किया गया है।

धार्मिक आचरण (Righteous Conduct) का अर्थ किसी विशेष सम्प्रदाय का पालन नहीं, बल्कि न्याय, कर्तव्य, ईमानदारी, आत्मानुशासन, करुणा तथा नैतिक उत्तरदायित्व के अनुरूप जीवन-व्यवहार करना है। बौद्ध दर्शन के सम्यक वाणी, सम्यक कर्म और सम्यक आजीविका जैसे सिद्धांत धार्मिक आचरण के व्यावहारिक स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।

शिक्षा विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा एवं धार्मिक आचरण का विकास अध्ययन-अध्यापन, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा आदर्श शिक्षक के व्यवहार के माध्यम से करती है। यदि विद्यार्थी परीक्षा में

ईमानदारी, विद्यालय में अनुशासन तथा समाज में उत्तरदायित्व का पालन करता है, तो वह केवल नियमों का पालन नहीं करता, बल्कि मूल्यपरक जीवन जीना सीखता है।

उदाहरण : यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करने के बजाय अपनी वास्तविक क्षमता के आधार पर परीक्षा देता है, तो यह सत्य एवं धार्मिक आचरण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करना तथा नागरिक कर्तव्यों का पालन करना भी धार्मिक आचरण का व्यवहारिक रूप है।

3. शांति एवं अहिंसा: मानवीय सह-अस्तित्व और शिक्षा की आधारशिला

शांति (Peace) केवल युद्ध या संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि मानसिक संतुलन, सामाजिक समरसता, न्यायपूर्ण संबंधों तथा सहयोगपूर्ण जीवन का सकारात्मक स्वरूप है। वर्तमान विश्व में बढ़ती हिंसा, द्वेष और असहिष्णुता के समाधान के लिए शांति एवं अहिंसा का मार्ग ही सर्वाधिक प्रभावी है।

अहिंसा (Non-violence) का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना है। भारतीय परम्परा में वैदिक, जैन, बौद्ध एवं गांधीवादी दर्शन ने अहिंसा को सर्वोच्च नैतिक मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। अहिंसा मानव सभ्यता के संरक्षण तथा विश्वकल्याण का मूल आधार है।

शिक्षा शांति एवं अहिंसा के मूल्यों का विकास संवाद, सहयोगात्मक अधिगम, समावेशी शिक्षा, संघर्ष-निवारण तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के माध्यम से करती है। विद्यालय में विद्यार्थियों को विविधता में एकता, सहिष्णुता, लोकतांत्रिक सहभागिता तथा मानवाधिकारों के सम्मान का अभ्यास कराया जाता है। इससे उनमें संवेदनशीलता तथा सह-अस्तित्व की भावना विकसित होती है।

महात्मा गांधी का सत्याग्रह इसका सर्वोत्तम उदाहरण है, जिसमें सत्य, आत्मबल तथा अहिंसा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का मार्ग अपनाया गया। इसी प्रकार भगवान बुद्ध के पंचशील सिद्धांत—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं संयम—नैतिक एवं शांतिपूर्ण समाज की स्थापना के लिए शिक्षा की उपयोगिता को रेखांकित करते हैं।

उदाहरण : विद्यालयों में 'पीयर मेडिएशन' (Peer Mediation), समूह-अधिगम, सामूहिक खेल तथा सेवा-शिक्षण (Service Learning) जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों में संवाद, सहयोग, सहिष्णुता और अहिंसक समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करती हैं। यही मूल्य आगे चलकर उत्तरदायी नागरिकता तथा संवैधानिक आदर्शों के पालन का आधार बनते हैं।

• उपसंहार

शिक्षा के माध्यम से सार्वभौमिक मूल्यों—सत्य, धार्मिक आचरण, शांति एवं अहिंसा—का विकास व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र उत्थान का आधार है। प्रस्तुत शोधपत्र से स्पष्ट होता है कि ये मूल्य भारतीय ज्ञान-परम्परा, बौद्ध एवं गांधीवादी चिंतन तथा संवैधानिक आदर्शों के मूल तत्व हैं, जो मानव गरिमा, सामाजिक न्याय और विश्वबंधुत्व की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया न होकर चरित्र निर्माण, नैतिक निर्णय क्षमता तथा उत्तरदायी नागरिकता के विकास का सशक्त माध्यम है। अतः विद्यालयी शिक्षा में मूल्यपरक पाठ्यक्रम, शिक्षक का आदर्श आचरण, अनुभवात्मक अधिगम, सामुदायिक सहभागिता तथा सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों को प्रभावी रूप से समाहित किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति सम्मान, मौलिक कर्तव्यों के निर्वहन की भावना तथा शांतिपूर्ण एवं सहिष्णु समाज के निर्माण की चेतना विकसित होगी। वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में मूल्य-आधारित शिक्षा न केवल व्यक्तिगत उत्कृष्टता, बल्कि सामाजिक समरसता और सतत विकास के लिए भी अनिवार्य सिद्ध होती है।

संदर्भ

1. अरुण प्रताप सिंह. (2022). *शांति और अहिंसा की अवधारणा : वर्तमान संदर्भ में*. International Journal of Multidisciplinary Trends, 4(2), 03–05.
2. मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय. (प्रकाशन वर्ष उपलब्ध नहीं). *एम.ए. (पूर्वार्ध) – द्वितीय प्रश्नपत्र : अहिंसा एवं शांति का समाजशास्त्र* (स्वाध्याय सामग्री). भोपाल: मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय.
3. Government of India. (1950). *The Constitution of India*. Ministry of Law and Justice, Government of India.
4. Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
5. National Council of Educational Research and Training. (2023). *National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE 2023)*. New Delhi: NCERT.
6. Gandhi, M. K. (1958). *The Story of My Experiments with Truth*. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.
7. Radhakrishnan, S. (2009). *The Principal Upanishads*. New Delhi: HarperCollins India.
8. Vivekananda, S. (2013). *The Complete Works of Swami Vivekananda (Vols. 1–9)*. Kolkata: Advaita Ashrama.